National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 07-01-2025, Accepted: 06-02-2025, Published: 21-02-2025
Volume 10, Issue 1, 2025, Page No. 14-17

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० मान सिंह[1], लाल बहादुर यादव[2]
[1] आचार्य, शिक्षक–शिक्षा संकाय, सतीश चन्द्र कॉलेज, बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्र, शिक्षक–शिक्षा संकाय, सतीश चन्द्र कॉलेज, बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक एवं मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शोध पत्र उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें ग्रामीण और शहरी विद्यालयों, सरकारी एवं निजी विद्यालयों के संदर्भ में विभिन्न कारकों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में कक्षा–कक्ष की भौतिक संरचना, शिक्षण संसाधन, शिक्षक–छात्र संबंध, अनुशासन, सह–पाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ तथा शिक्षण पद्धतियों की तुलना की गई है। शोध के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों से प्राप्त डेटा का विश्लेषण कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों के सीखने के स्तर, आत्मविश्वास और समग्र व्यक्तित्व पर विद्यालयी वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि समृद्ध विद्यालयी वातावरण न केवल शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ाता है, बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिकता के विकास में भी सहायक सिद्ध होता है। इसके आधार पर विद्यालयी वातावरण में सुधार हेतु नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

मूल शब्दः उच्च प्राथमिक स्तर, विद्यार्थी, विद्यालयी वातावरण, तुलनात्मक अध्ययन, मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात इत्यादि

विद्यालयी वातावरण एक ऐसी सामाजिक, मानसिक और शैक्षिक संरचना है, जो विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रभावित करती है। यह वातावरण उनके सीखने, सोचने और सामाजिक व्यवहार की दिशा को निर्धारित करता है। उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी, जो प्रायः कक्षा 6 से 8 तक के होते हैं, इस आयु में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण परिवर्तनों से गुजरते हैं। इस स्तर पर विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन, सामाजिक सहभागिता और मानसिक स्थिति पर गहरा प्रभाव डालता है। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण, जिसमें शिक्षक–शिष्य संबंध, कक्षा की स्थिति, पाठ्यक्रम, सह पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और शैक्षिक संसाधन शामिल हैं, विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि विभिन्न विद्यालयों में उपलब्ध वातावरण, विद्यार्थियों के शैक्षिक परिणामों और मानसिक स्थिति पर कैसे विभिन्न प्रभाव डालते हैं। यह अध्ययन उन कारकों की पहचान करेगा जो विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं, जैसे कि विद्यालय का शैक्षिक वातावरण, शिक्षक की भूमिका, विद्यालय की सुविधाएँ और छात्रों के आपसी संबंध। साथ ही, यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करेगा कि कैसे सामाजिक–आर्थिक स्थिति, समुदाय और विद्यालय का प्रशासनिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों के विद्यालयी अनुभवों और उनके समग्र विकास को प्रभावित करता है।

इस शोध से यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि विद्यालयों के विभिन्न वातावरणों के बीच क्या अंतर हैं और ये अंतर विद्यार्थियों के शैक्षिक परिणामों को कैसे प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक क्षेत्र में सुधार की दिशा में मार्गदर्शन करेगा, बल्कि विद्यार्थियों के मानसिक और सामाजिक विकास को भी समग्र रूप से समझने में सहायक होगा।

आवश्यकता एवं महत्वः विद्यालयी वातावरण किसी भी विद्यार्थी के शैक्षिक, सामाजिक एवं मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6–8) के विद्यार्थी संवेदनशील अवस्था में होते हैं, जहाँ उनके शैक्षिक प्रदर्शन, आत्मविश्वास, और नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है। इस स्तर पर विद्यालयी वातावरण, जैसे–शिक्षण विधियाँ, अनुशासन, सहपाठियों एवं शिक्षकों के साथ संबंध, भौतिक संसाधन, एवं सह–पाठयक्रमीय गतिविधियाँ–विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रभावित करते हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से विभिन्न विद्यालयों के वातावरण की तुलना करके यह समझा जा सकता है कि कौन–से कारक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहारिक विकास को अधिक प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन नीति–निर्माताओं, शिक्षकों एवं अभिभावकों को एक समृद्ध और अनुकूल शैक्षिक वातावरण निर्मित करने में सहायक होगा, जिससे विद्यार्थियों के सीखने की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकनः सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है।

सम्बंधित साहित्य

आर०, विश्वनाथ एवं आरव जागेश्वरा (2016) ने "इम्पैक्ट ऑफ स्कूल एन्वायरमेन्ट एवं मेंटल हेल्थ स्टेट्स ऑन अचीवमेंट मोटीवेशन अमंग हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स" पर अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि विद्यालय वातावरण, गृह वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य स्थिति सार्थक रूप से उपलब्धि प्रेरणा से जुड़े हैं। अच्छे विद्यालय वातावरण, गृह वातावरण तथा अच्छी मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा निम्न विद्यालय वातावरण, गृह वातावरण व खराब मानसिक स्वास्थ्य स्थिति के

सापेक्ष बेहतर ही है। विद्यालयी वातावरण तथा गृह वातावरण एवं गृह वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य स्थिति के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

किशोर, एन0 (2016) ने "अकेडमिक अचीवमेन्ट इन रिलेशन टू स्कूल इन्वायरमेन्ट, होम इन्वायरमेन्ट एण्ड मेन्टल हेल्थ स्टेटस अमंग हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स" पर शोध किया तथा निष्कर्ष में पाया कि हाईस्कूल विद्यार्थियों में बालक व बालिकाओं, शहरी तथा ग्रामीण एवं सहशिक्षा व एकल शिक्षा में विद्यालय वातावरण के सन्दर्भ में अन्तर पाया गया। विद्यालय वातावरण में लिंग, स्थानीयता एवं विद्यालय के प्रकार में सार्थक परस्पर अन्तः क्रिया पायी जाती है। विद्यालय वातावरण, गृह वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य स्थिति की सार्थकता से हाईस्कूल विद्यार्थियों के सभी विषयों से शैक्षिक निष्पत्ति से जुडी है।

कुमार, फूल (2017) ने "स्टडी ऑफ पर्सनैलिटी एण्ड एडजस्टमेन्ट ऑफ अडोलेसेन्ट्स एण्ड रिलेटेड टू अचीवमेन्ट मोटीवेशन इन वैरिंग स्कूल इनवायरमेन्ट" पर शोध अध्ययन कर निम्न निष्कर्ष निकाला कि बालकों में उच्च संस्करण से प्रेरित और कम उपलब्धि के लिए अतिरिक्त संस्करण पर बालिका प्रेरित (व्यक्तित्त्व का कारक) के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। यह पाया गया कि अंतर्मुखता (व्यवितत्त्व का कारक) खराब विद्यालय वातावरण वाले बालकों और अच्छे वातावरण वाले बालकों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः इस शोध के उद्देश्य निम्नवत हैं:

1. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की विद्यालयी वातावरण में तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएंः प्रस्तुत शोध की परिकल्पना अधोलिखित हैः

1. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधिः प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्याः प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के भदोही जनपद के समस्त सरकारी व निजी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6, 7 व 8 के विद्यार्थियों को जनसँख्या के रूप में चुना गया है ।

न्यादर्शः प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सम्भाव्य विधि के अंतर्गत आने वाले सरल यादृच्छिक न्यादर्शन (Simple Randaom Sampling) विधि का प्रयोग किया है। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के भदोही जनपद के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित सरकारी व निजी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 6, 7 व 8 में अध्ययनरत 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

इस शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण से सम्बंधित आकंड़ों के लिए डॉ० के० एस० मिश्रा (1984) द्वारा निर्मित "विद्यालयी वातावरण मापनी" उपकरण को अपनाया गया है।

शोध से प्राप्त परिणामों का सारणीबद्ध व उनकी व्याख्या अग्रवत है:

परिकल्पना 1: उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1: उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	CR मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
शहरी	400	160.70	11.12	798	6.770	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
ग्रामीण	400	155.42	10.90				

तालिका संख्या 1 में उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 160.70 तथा मानक विचलन 11.12 है, जबकि दूसरा समूह ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 155.42 तथा मानक विचलन 10.90 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (CR) की गणना की गई जिसका मान 6.770 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर होता है। इस प्रकार शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना संख्या 1 अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

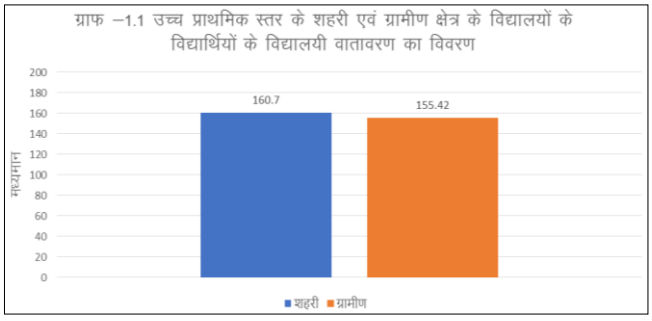

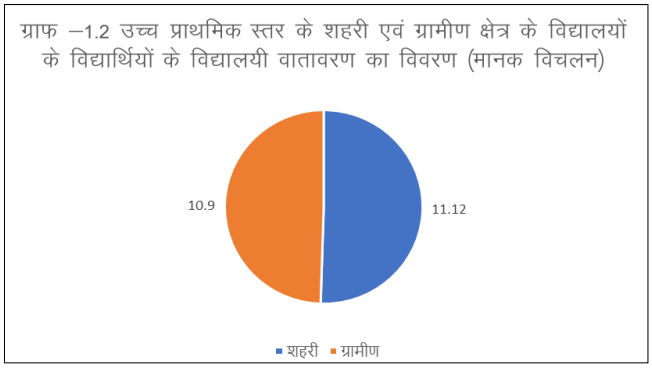

परिकल्पना 2: उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है ।

तालिका 2: उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	CR मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
निजी विद्यालय	200	162.79	11.06	398	3.840	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
सरकारी विद्यालय	200	158.60	10.79				

तालिका संख्या 2 में उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 162.79 तथा मानक विचलन 11.06 है, जबकि दूसरा समूह उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 158.60 तथा मानक विचलन 10.79 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (CR) की गणना की गई जिसका मान 3.840 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर होता है। इस प्रकार शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना संख्या 2 अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

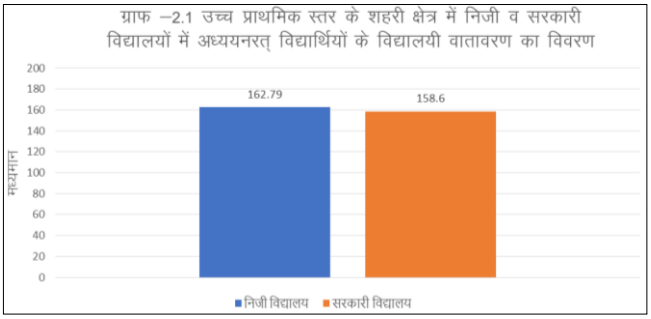

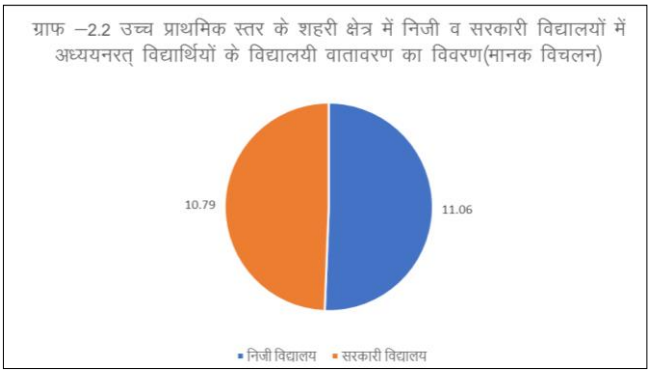

परिकल्पना 3: उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 3: उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की विद्यालयी वातावरण का विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	CR मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
निजी विद्यालय	200	158.47	10.47	398	5.817	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
सरकारी विद्यालय	200	152.38	10.17				

तालिका संख्या 3 में उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र में निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र में निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 158.47 तथा मानक विचलन 10.47 है, जबकि दूसरा समूह उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 152.38 तथा मानक विचलन 10.17 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात (CR) की गणना की गई जिसका मान 5.817 प्राप्त हुआ है जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र में निजी व सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर होता है। इस प्रकार शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना संख्या 3 अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

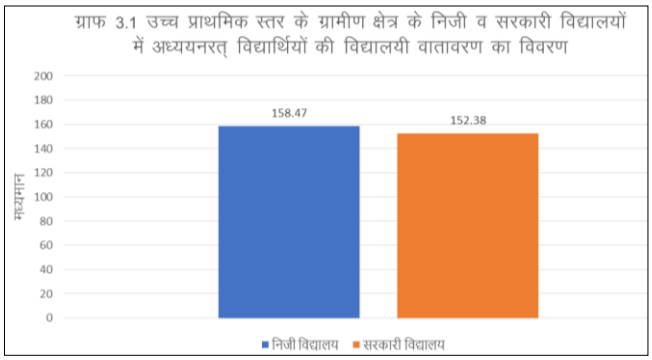

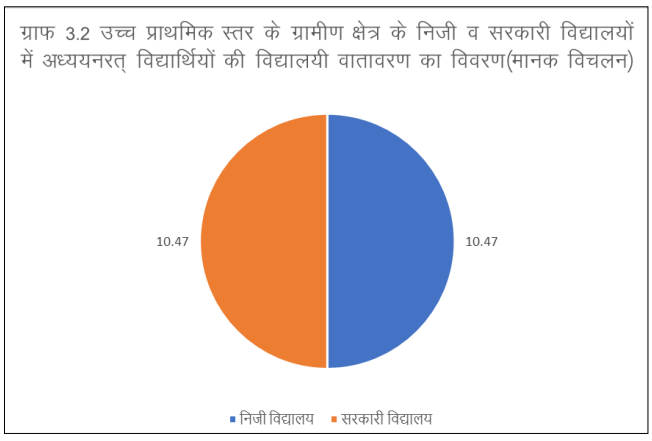

निष्कर्ष

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में स्पष्ट रूप से सार्थक अंतर देखा जाता है। शहरी विद्यालयों में शिक्षण–संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, योग्य शिक्षकों की उपलब्धता एवं

सह–पाठ्यक्रमीय गतिविधियों की अधिकता देखी जाती है, जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में सहायता मिलती है। इसके विपरीत, ग्रामीण विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं की सीमित उपलब्धता, शिक्षकों की कमी, परिवहन की समस्याएँ एवं पारिवारिक वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। इन अंतरों के कारण शहरी विद्यार्थियों को अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अतः यह परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के वातावरण में सार्थक अंतर होता है, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता और उपलब्धियों को प्रभावित करता है।

उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी क्षेत्र में स्थित निजी एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण में महत्वपूर्ण अंतर देखा गया। निजी विद्यालयों में भौतिक संसाधनों, शिक्षण पद्धतियों, अनुशासन, सह–पाठयक्रम गतिविधियों एवं तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जिससे वहाँ का वातावरण अधिक प्रेरणादायक प्रतीत हुआ। वहीं, सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की सीमितता, शिक्षकों की उपलब्धता एवं शिक्षण प्रक्रिया में भिन्नता देखी गई, जिससे विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव पर प्रभाव पड़ा। अतः यह परिकल्पना पुष्ट होती है कि शहरी क्षेत्र में निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर मौजूद है।

उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण में स्पष्ट व सार्थक अंतर पाया जाता है। निजी विद्यालयों में भौतिक संसाधन, अनुशासन, शिक्षण पद्धति, शिक्षकों की उपस्थिति एवं विद्यार्थियों की सहभागिता अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी देखी गई, जबकि सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी, शिक्षकों की अनियमित उपस्थिति तथा शैक्षिक वातावरण की चुनौतियाँ अधिक देखी गईं। इन अंतरों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की सीखने की गति, शैक्षिक उपलब्धि एवं समग्र विकास पर प्रभाव पड़ता है। अतः विद्यालयी वातावरण को सुधारने हेतु सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की गुणवत्ता बढ़ाने एवं शिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित करने की आवश्यकता है, जिससे सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो सकें।

शोध की उपयोगिताः उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह शोध शिक्षकों, प्रशासकों और नीति–निर्माताओं को विभिन्न विद्यालयों के वातावरण की गुणवत्ता को समझने और उसमें सुधार लाने में सहायता करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि भौतिक संसाधन, शिक्षण पद्धतियाँ, अनुशासन, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और शिक्षकों का व्यवहार विद्यार्थियों के सीखने और मानसिक विकास को कैसे प्रभावित करता है। इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर विद्यालयी वातावरण को अधिक समावेशी, प्रेरणादायक और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के अनुकूल बनाया जा सकता है। साथ ही, यह तुलनात्मक अध्ययन विभिन्न विद्यालयों के श्रेष्ठ प्रथाओं को अपनाने और शैक्षिक नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होगा ।

सन्दर्भ सूची

1. राय, पारस नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
2. तिवारी, आर.(2015): विद्यालयी वातावरण और छात्रों का व्यक्तित्व विकास, शिक्षा निकेतन, पटना।
3. शर्मा, वी. (2016): शिक्षा का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यः विद्यालयी वातावरण की भूमिका, अंशिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. सिंह, अरूण कुमार (2017): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना ।
5. दुबे, पी. (2017): विद्यालयी वातावरण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, ज्ञानदीप प्रकाशन, वाराणसी।
6. अग्रवाल, एस. (2018): विद्यालयी वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
7. वर्मा, एम. (2018): विद्यालय और बाल विकासरू एक तुलनात्मक दृष्टिकोण, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
8. गुप्ता, के. (2019): विद्यालय का वातावरण और शिक्षण प्रक्रिया, राजस्थानी ग्रंथागार, जयपुर।
9. चौधरी, आर. (2020): विद्यालयी परिवेश और विद्यार्थी विकास, शिक्षा भारती प्रकाशन, लखनऊ।
10. यादव, डी. (2020): विद्यालयी अनुशासन और उसका प्रभाव, ज्ञान सागर पब्लिकेशन, आगरा।
11. मिश्रा, एस. (2021): विद्यालयी संस्कृति एवं शैक्षिक सफलता, नवीन शिक्षा प्रकाशन, भोपाल।
12. जोशी, पी. (2022): विद्यालयी परिवेश का छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव, सुरभि प्रकाशन, मुंबई।